हरिवंश राय बच्चन

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» बहादुरशाह ज़फ़र की ग़ज़ल का परिचय

प्रश्न 1 (आसान). बहादुरशाह ज़फ़र कौन थे?
उत्तर – बहादुरशाह ज़फ़र अंतिम मुगल बादशाह थे।

प्रश्न 2 (आसान). उनकी ग़ज़ल में कौन सा भाव प्रमुख है?
उत्तर – उनकी ग़ज़ल में वतन से दूरी और बिछड़ने का दुख प्रमुख है।

प्रश्न 3 (मध्यम). ज़फ़र को दफनाने के लिए क्या नसीब नहीं हुआ?
उत्तर – ज़फ़र को अपने वतन में, अपनी पसंदीदा जगह पर दो गज ज़मीन भी नसीब नहीं हुई दफनाने के लिए।

प्रश्न 4 (कठिन). उनकी ग़ज़ल उस समय की किस ऐतिहासिक घटना से जुड़ी है?
उत्तर – उनकी ग़ज़ल 1857 के सिपाही विद्रोह (भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम) के बाद की परिस्थितियों और उनके निर्वासन से जुड़ी है।

» हरिवंश राय बच्चन: जीवन परिचय और प्रमुख रचनाएँ

प्रश्न 5 (आसान). हरिवंश राय बच्चन जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
उत्तर – उनका जन्म सन् 1907 में इलाहाबाद में हुआ था।

प्रश्न 6 (आसान). उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य रचना का नाम क्या है?
उत्तर – उनकी सबसे प्रसिद्ध काव्य रचना 'मधुशाला' है।

प्रश्न 7 (मध्यम). हरिवंश राय बच्चन जी की आत्मकथा कितने खंडों में है और उसका नाम क्या है?
उत्तर – उनकी आत्मकथा चार खंडों में है और उसका नाम 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' है।

प्रश्न 8 (कठिन). हरिवंश राय बच्चन ने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता के बजाय अपनी कविताओं में कौन सी शैली अपनाई और क्यों?
उत्तर – उन्होंने सीधी-सादी जीवंत भाषा और संवेदनसिक्त गेय शैली अपनाई, क्योंकि वे व्यक्तिगत जीवन की घटनाओं को सहज अनुभूति के साथ ईमानदारी से व्यक्त करना चाहते थे, जो उनकी लोकप्रियता का मूल आधार बनी।

» बच्चन का 'हालावादी दर्शन'

प्रश्न 9 (आसान). बच्चन के हालावादी दर्शन का मुख्य भाव क्या है?
उत्तर – जीवन के हर अनुभव को सहर्ष स्वीकार करना।

प्रश्न 10 (आसान). हालावादी दर्शन में 'दुनिया' को क्या कहा गया है?
उत्तर – मधुशाला।

प्रश्न 11 (मध्यम). हालावादी दर्शन के अनुसार, हमें जीवन की कठिनाइयों को कैसे देखना चाहिए?
उत्तर – जीवन की कठिनाइयों को भी जीवन का एक अनिवार्य और स्वीकार्य हिस्सा मानना चाहिए, जैसे मधुकलश का एक कड़वा घूँट।

प्रश्न 12 (कठिन). बच्चन के हालावादी दर्शन और सूफी दर्शन में क्या समानता है?
उत्तर – दोनों ही दर्शन दुनिया से 'इश्क' करने, यानी प्रेम करने और हर चीज को स्वीकार करने की बात करते हैं, जिससे मन में एक बेखयाली और शांति छा जाती है, और 'तेरा-मेरा' के झगड़े खत्म हो जाते हैं।

» आत्मपरिचय कविता: केंद्रीय भाव

प्रश्न 13 (आसान). कविता का नाम 'आत्मपरिचय' क्यों रखा गया है?
उत्तर – क्योंकि इसमें कवि स्वयं का, अपनी भावनाओं का और दुनिया से अपने रिश्ते का परिचय देते हैं।

प्रश्न 14 (आसान). कवि ने दुनिया से अपने रिश्ते को 'प्रीतिकलह' क्यों कहा है?
उत्तर – क्योंकि दुनिया से प्यार भी है और संघर्ष/शिकायत भी, यह दोनों बातें एक साथ मौजूद हैं।

प्रश्न 15 (मध्यम). कविता में 'रोदन में राग' और 'शीतल वाणी में आग' जैसे विरोधाभासों का क्या महत्व है?
उत्तर – ये विरोधाभास जीवन की जटिलताओं को दर्शाते हैं, जहाँ सुख-दुख, शांति-क्रोध जैसे विपरीत भाव एक साथ चलते हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). इस कविता के केंद्रीय भाव का 'हालावादी दर्शन' से क्या संबंध है?
उत्तर – हालावादी दर्शन ज़िंदगी को स्वीकार करने पर ज़ोर देता है, और 'आत्मपरिचय' कविता भी व्यक्ति और समाज के खट्टे-मीठे रिश्तों को स्वीकार करके अपनी पहचान बनाने की बात करती है।

» 'आत्मपरिचय' कविता का विस्तृत विश्लेषण - भाग 1

प्रश्न 17 (आसान). कविता की पहली पंक्ति में 'जग-जीवन का भार' से कवि का क्या आशय है?
उत्तर – दुनियावी जीवन की ज़िम्मेदारियाँ और परेशानियाँ।

प्रश्न 18 (आसान). 'स्नेह-सुरा' का क्या मतलब है?
उत्तर – प्यार में मस्त रहना या प्रेम का नशा।

प्रश्न 19 (मध्यम). कवि क्यों कहता है कि वह 'कभी न जग का ध्यान किया करता' है?
उत्तर – कवि प्यार की मस्ती में इतना लीन है कि उसे दुनिया की बातों या परवाह से कोई मतलब नहीं।

प्रश्न 20 (कठिन). 'साँसों के दो तार' और 'झंकृत' होने में क्या गहरा अर्थ छिपा है?
उत्तर – साँसों के दो तार कवि के जीवन और उसकी भावनाओं के प्रतीक हैं, जिन्हें किसी प्रियजन के स्पर्श (प्रेम) ने संगीत और मधुरता से भर दिया है, जिससे कवि का जीवन प्रेममय हो गया है।

» 'आत्मपरिचय' कविता का विस्तृत विश्लेषण - भाग 2

प्रश्न 21 (आसान). कवि को यह संसार 'अपूर्ण' क्यों लगता है?
उत्तर – कवि को यह संसार प्रेम की कमी के कारण अपूर्ण लगता है।

प्रश्न 22 (आसान). 'यौवन का उन्माद' का क्या अर्थ है?
उत्तर – 'यौवन का उन्माद' का अर्थ है जवानी का जोश या पागलपन।

प्रश्न 23 (मध्यम). कवि सुख-दुख दोनों में मग्न क्यों रहता है? क्या यह सामान्य व्यवहार है?
उत्तर – कवि प्रेम की मस्ती और विरह में इतना लीन है कि उसे बाहरी सुख-दुख प्रभावित नहीं करते। यह सामान्य व्यवहार से अलग है क्योंकि अधिकतर लोग सुख में प्रसन्न और दुख में दुखी होते हैं, पर कवि दोनों में समान भाव से रहता है।

प्रश्न 24 (कठिन). कवि के 'यौवन का उन्माद' और 'उन्मादों में अवसाद' के बीच क्या संबंध है? स्पष्ट करें।
उत्तर – कवि के 'यौवन का उन्माद' बाहरी रूप से दिखने वाला जोश और प्रेम की मस्ती है। इसके विपरीत, 'उन्मादों में अवसाद' उस जोश के भीतर छिपा हुआ गहरा दुख और उदासी है, जो किसी प्रिय की याद के कारण उत्पन्न हुई है। यह संबंध विरोधाभासी है, जहाँ बाहरी खुशी के भीतर गहरी पीड़ा छिपी है।

» 'आत्मपरिचय' कविता का विस्तृत विश्लेषण - भाग 3

प्रश्न 25 (आसान). कवि संसार को 'नादान' क्यों कहते हैं?
उत्तर – क्योंकि संसार सत्य को नहीं जान पाया, सब यत्न करके मिट गए, लेकिन किसी ने सच्चाई को नहीं जाना, फिर भी लोग दाना (लाभ) के पीछे भागते हैं।

प्रश्न 26 (आसान). 'मैं सीखा ज्ञान भुलाना!' का क्या अर्थ है?
उत्तर – कवि कहते हैं कि उन्होंने जो भी सांसारिक ज्ञान सीखा है, उसे अब भूलना सीख रहे हैं, क्योंकि वो ज्ञान उन्हें दुनिया की सच्चाई नहीं बता पाया।

प्रश्न 27 (मध्यम). कवि किस पृथ्वी को ठुकराते हैं और क्यों?
उत्तर – कवि उस पृथ्वी को ठुकराते हैं जिस पर लोग धन-दौलत (वैभव) इकट्ठा करते हैं। वो इसे ठुकराते हैं क्योंकि उनके लिए भौतिक सुख-सुविधाएँ अर्थहीन हैं, उनका प्रेम का संसार इन सबसे ऊपर है।

प्रश्न 28 (कठिन). कवि स्वयं को 'दुनिया का एक नया दीवाना' क्यों कहते हैं? इस कथन से उनका क्या आशय है?
उत्तर – कवि स्वयं को 'दुनिया का एक नया दीवाना' इसलिए कहते हैं क्योंकि उनका प्रेम और जीवन को देखने का नज़रिया दुनिया से बिल्कुल अलग है। वो पारंपरिक कवि या ज्ञानी नहीं हैं; बल्कि एक ऐसे प्रेमी हैं जो अपनी मस्ती और दर्द को गीत बनाकर दुनिया को सुनाते हैं, जिसे सुनकर दुनिया झूम उठती है। वे दुनिया के हिसाब से नहीं चलते, बल्कि अपनी ही धुन में जीते हैं, इसलिए 'नया दीवाना' हैं।

» गीत 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!': केंद्रीय संदेश

प्रश्न 29 (आसान). 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!' पंक्ति किस भावना को दर्शाती है?
उत्तर – समय के तेज़ी से बीतने की भावना को।

प्रश्न 30 (आसान). कवि ने पक्षियों का उदाहरण क्यों दिया है?
उत्तर – यह समझाने के लिए कि प्रियजनों से मिलने की आतुरता कैसी होती है।

प्रश्न 31 (मध्यम). इस गीत में 'क्षणभंगुरता' से क्या अभिप्राय है?
उत्तर – क्षणभंगुरता का अर्थ है कि समय बहुत कम है और यह बहुत तेज़ी से बीत जाता है, एक पल में सब कुछ बदल जाता है।

प्रश्न 32 (कठिन). यह गीत हमें जीवन के प्रति क्या प्रेरणा देता है? अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर – यह गीत हमें जीवन के प्रति जागरूक और सक्रिय रहने की प्रेरणा देता है। यह सिखाता है कि हमें समय रहते अपने कर्तव्यों को पूरा करना चाहिए और अपने प्रियजनों के साथ समय बिताना चाहिए, क्योंकि समय किसी का इंतज़ार नहीं करता।

» गीत 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!' का विश्लेषण

प्रश्न 33 (आसान). पथिक जल्दी-जल्दी क्यों चलता है?
उत्तर – पथिक को डर है कि कहीं रास्ते में रात न हो जाए और उसकी मंजिल भी अब पास है।

प्रश्न 34 (आसान). चिड़ियों के परों में चंचलता क्यों भर जाती है?
उत्तर – उन्हें अपने घोंसले में बैठे बच्चों की याद आती है, जो उनका इंतज़ार कर रहे होंगे।

प्रश्न 35 (मध्यम). कवि के 'पद शिथिल' क्यों हो जाते हैं?
उत्तर – कवि के कदम इसलिए धीमे पड़ जाते हैं क्योंकि कोई उनका घर पर इंतज़ार नहीं कर रहा, कोई उनसे मिलने को बेचैन नहीं है, जिससे उन्हें अकेलापन महसूस होता है।

प्रश्न 36 (कठिन). पथिक और चिड़िया के उदाहरण में 'मिलने की आतुरता' और कवि के उदाहरण में 'मिलने वाले के अभाव' से कवि क्या गहरा भाव दर्शाना चाहते हैं?
उत्तर – पथिक और चिड़िया का उदाहरण दर्शाता है कि जब जीवन में कोई लक्ष्य या प्रियजन हो, तो समय का जल्दी ढलना हमें सक्रिय और आशावान बनाता है। वहीं, कवि का उदाहरण दिखाता है कि जब जीवन में कोई अपना इंतज़ार करने वाला न हो, तो समय का तेज़ी से ढलना भी निरर्थक और उदासी भरा लगता है, जिससे जीवन की गति मंद पड़ जाती है।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. बहादुरशाह ज़फ़र की ग़ज़ल का मुख्य विषय क्या है?

› पहले ग़ज़ल की पंक्तियों को ध्यान से पढ़ो, जैसे 'लगता नहीं है दिल मेरा उजड़े दयार में' या 'कितना है बदनसीब ज़फ़र दफ़्न के लिए, दो गज ज़मीन भी न मिली कू-ए-यार में'।

› अब उन शब्दों और भावों पर विचार करो जो दुख, जुदाई, और बेबसी को दर्शाते हैं। 'उजड़े दयार', 'आलमे-नापायदार', 'हसरतों', 'दिल-ए-दागदार', 'बदनसीब ज़फ़र' जैसे शब्द।

› इन सबको मिलाकर निष्कर्ष निकालो कि कवि क्या कहना चाह रहा है।

› ज़फ़र को अपने ही वतन में, अपनी पसंद की जगह पर दफन होने की ख्वाहिश थी, जो पूरी नहीं हुई। यह सबसे बड़ा दर्द था।

› यह ग़ज़ल उनके निर्वासन और वतन से दूरी के गहरे दुख को व्यक्त करती है।

उत्तर – बहादुरशाह ज़फ़र की ग़ज़ल का मुख्य विषय अपने वतन से निर्वासन का गहरा दुख, अपनी मातृभूमि में दफन न हो पाने की टीस और एक बेबस शासक की पीड़ा है।

उदाहरण 2. हरिवंश राय बच्चन जी की किन्हीं तीन प्रमुख काव्य रचनाओं और उनकी आत्मकथा का नाम बताइए।

› सबसे पहले हमें काव्य रचनाएँ पहचाननी हैं। उनकी 'मधुशाला', 'मधुबाला' और 'मधुकलश' उनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएँ हैं।

› अब हमें उनकी आत्मकथा का नाम बताना है। उनकी आत्मकथा चार खंडों में प्रकाशित हुई थी, जिसका पहला खंड है 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ'।

उत्तर – हरिवंश राय बच्चन जी की तीन प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं: मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश। उनकी आत्मकथा का नाम 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' है।

उदाहरण 3. हरिवंश राय बच्चन के हालावादी दर्शन में 'मधुकलश' और 'मधुशाला' का क्या अर्थ है?

› पहले समझेंगे कि 'हालावादी दर्शन' क्या संदेश देता है: जीवन के हर अनुभव को स्वीकारना।

› फिर 'मधुकलश' का अर्थ समझेंगे: जीवन को एक मीठे घड़े जैसा मानना, जिसमें हर तरह के अनुभव भरे हैं।

› और 'मधुशाला' का अर्थ समझेंगे: दुनिया एक ऐसी जगह है जहाँ हम उन अनुभवों का 'घूँट' पीते हैं, उन्हें जीते हैं।

› दोनों मिलकर बताते हैं कि जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों को खुशी से स्वीकारना ही हालावादी दर्शन है।

उत्तर – हालावादी दर्शन में, 'मधुकलश' जीवन का प्रतीक है जो अनुभवों से भरा है, और 'मधुशाला' वह दुनिया है जहाँ हम इन अनुभवों को सहर्ष जीते और स्वीकार करते हैं।

उदाहरण 4. आत्मपरिचय कविता के केंद्रीय भाव को अपने शब्दों में समझाइए।

› पहला कदम: कविता का शीर्षक 'आत्मपरिचय' व्यक्ति के स्वयं को जानने पर ज़ोर देता है।

› दूसरा कदम: यह बताता है कि व्यक्ति और समाज के बीच गहरा रिश्ता है, जिसे कवि 'प्रीतिकलह' कहते हैं।

› तीसरा कदम: कविता में विरोधाभासी बातें एक साथ दिखती हैं, जैसे 'रोदन में राग', 'शीतल वाणी में आग'। यह जीवन के द्वंद्व को दर्शाता है।

› चौथा कदम: कवि के लिए अपनी पहचान और अस्मिता, इस समाज और दुनिया से ही बनती है, भले ही कभी-कभी यह दुनिया कष्ट दे।

उत्तर – आत्मपरिचय कविता का केंद्रीय भाव व्यक्ति की स्वयं की पहचान, उसके समाज के साथ खट्टे-मीठे (प्रीतिकलह) संबंधों और जीवन के विरोधाभासों को स्वीकार करने में निहित है। यह कविता सिखाती है कि हम समाज से कटकर नहीं रह सकते, और हमारी पहचान दुनिया के साथ हमारे द्वंद्वात्मक रिश्ते से ही बनती है।

उदाहरण 5. कवि 'जग-जीवन का भार' और 'स्नेह-सुरा' का क्या अर्थ बताना चाहता है?

› पहले 'जग-जीवन का भार' शब्द को समझें। जग-जीवन का अर्थ है दुनियावी जीवन, और भार का अर्थ है बोझ या ज़िम्मेदारी।

› कवि यहाँ स्वीकार कर रहा है कि वह इस सांसारिक जीवन की सभी ज़िम्मेदारियों, चिंताओं और मुश्किलों को अपने साथ लिए फिरता है, जैसे हर आम इंसान करता है।

› अब 'स्नेह-सुरा' को देखें। स्नेह का अर्थ है प्यार और सुरा का अर्थ है शराब।

› कवि इन दोनों शब्दों को जोड़कर यह बताना चाहता है कि वह प्यार के नशे में डूबा हुआ है, उसे प्यार की मस्ती घेरे हुए है। यह एक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है, जिसका अर्थ है कि वह प्रेम की भावनाओं में खोया रहता है और दुनिया की परवाह नहीं करता।

उत्तर – 'जग-जीवन का भार' से कवि का अर्थ है दुनियावी जीवन की ज़िम्मेदारियाँ और परेशानियाँ, जिन्हें वह ढोता है। 'स्नेह-सुरा' से कवि का अर्थ है प्रेम की मस्ती और उसमें लीन रहना, जिससे वह दुनिया की परवाह नहीं करता।

उदाहरण 6. कवि 'जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ' पंक्ति से क्या आशय व्यक्त करना चाहते हैं?

› पहले पंक्ति को समझें: 'जला हृदय में अग्नि' का अर्थ है दिल में आग का जलना। 'दहा करता हूँ' का अर्थ है जलते रहना, तड़पते रहना।

› अब सोचें, यह आग किस चीज़ की हो सकती है? कवि 'आत्मपरिचय' दे रहा है और प्रेम की बात कर रहा है। तो यह आग प्रेम की विरह वेदना या तीव्र भावना की हो सकती है।

› दोनों वाक्यों को जोड़कर अर्थ निकालें: कवि के हृदय में प्रेम की तीव्र भावना या विरह की अग्नि जल रही है, जिसमें वह निरंतर जलता रहता है, यानी प्रेम में लीन रहता है या प्रिय से दूर रहने के कष्ट को सहता रहता है।

उत्तर – कवि इस पंक्ति से व्यक्त करना चाहते हैं कि उनके हृदय में प्रेम की तीव्र वेदना या विरह की अग्नि निरंतर जलती रहती है, जिसमें वे लीन रहते हैं और उसी में तड़पते रहते हैं।

उदाहरण 7. कवि कहते हैं 'मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ, शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ।' इन पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए.

› सबसे पहले, 'निज रोदन में राग' का अर्थ समझें। 'रोदन' का मतलब है रोना या आंसू। 'राग' का मतलब है संगीत या प्रेम की भावना। तो, कवि कहते हैं कि उनके रोने में भी प्रेम और भावनाओं का संगीत है। उनका दुख भी उनकी अभिव्यक्ति का एक माध्यम है, जिसे वो दुनिया को देते हैं।

› दूसरा, 'शीतल वाणी में आग' का विश्लेषण करें। 'शीतल वाणी' यानी शांत और मधुर आवाज। 'आग' यानी जोश, क्रांति, या विद्रोह। कवि की बातें सुनने में भले ही शांत लगें, पर उनमें इतनी तीव्रता और सच्चाई है कि वो लोगों के मन में हलचल मचा देती हैं, परिवर्तन की चिंगारी जगा देती हैं।

› तीसरा, इन दोनों भावों को जोड़कर देखें। कवि अपने विरोधाभासी व्यक्तित्व को बताते हैं - बाहर से भले ही वो दुखी या शांत दिखें, पर उनके अंदर प्रेम की गहराई और विचारों की प्रचंडता है, जो दुनिया को झकझोर सकती है।

उत्तर – इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि उनके आँसुओं में भी प्रेम का संगीत और भावनाएं छिपी हैं, जिसे वो दुनिया के साथ साझा करते हैं। उनकी शांत और मधुर दिखने वाली वाणी में भी इतना जोश और विचारों की शक्ति है कि वो लोगों के मन में क्रांति की आग जला सकती है। यह कवि के व्यक्तित्व का विरोधाभास दर्शाता है - दुख में भी प्रेम और शांति में भी शक्ति।

उदाहरण 8. 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!' गीत का केंद्रीय संदेश क्या है? विस्तार से समझाइए।

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि यह गीत कवि हरिवंश राय बच्चन ने लिखा है और यह 'निशा निमंत्रण' से लिया गया है।

› दूसरा, हम देखेंगे कि गीत में 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' पंक्ति दोहराई गई है, जो समय की तेज़ गति और उसकी क्षणभंगुरता को बताती है।

› तीसरा, कवि ने उदाहरण दिए हैं– जैसे चिड़िया अपने बच्चों के लिए तेज़ी से घोंसले की ओर बढ़ती है, वैसे ही मनुष्य भी अपने लक्ष्य या प्रियजनों तक पहुँचने के लिए आतुर होता है।

› चौथा, इसका केंद्रीय संदेश यही है कि जीवन बहुत छोटा है, और हमें अपने प्रियजनों से मिलने की उत्कंठा होती है, और अपने उद्देश्यों को पूरा करने की जल्दी होती है, क्योंकि समय किसी का इंतज़ार नहीं करता।

› अंत में, हमें यह समझना चाहिए कि यह गीत हमें जीवन के प्रति सक्रिय रहने और समय का सदुपयोग करने की प्रेरणा देता है।

उत्तर – इस गीत का केंद्रीय संदेश यह है कि समय बहुत तेज़ी से बीतता है (क्षणभंगुरता), और इस सीमित समय में हर प्राणी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने और अपने प्रियजनों से मिलने के लिए अत्यंत आतुर रहता है। यह हमें जीवन के प्रति जागरूक और सक्रिय रहने की प्रेरणा देता है।

उदाहरण 9. कवि ने 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' पंक्ति को तीन अलग-अलग उदाहरणों से कैसे पुष्ट किया है, व्याख्या कीजिए।

› सबसे पहले हम 'पथिक' का उदाहरण लेंगे। कवि कहते हैं कि दिनभर का थका हुआ यात्री भी जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता है। क्यों? क्योंकि उसे डर है कि रास्ते में ही रात न हो जाए और उसकी मंजिल भी अब दूर नहीं है। उसे अपने घर पहुँचने की जल्दी है।

› फिर चिड़िया का उदाहरण आता है। चिड़िया दिन ढलते ही तेज़ी से उड़ने लगती है। क्यों? क्योंकि उसके घोंसले में बच्चे उसके इंतज़ार में होंगे और अपनी माँ की राह देख रहे होंगे। बच्चों से मिलने की आतुरता उसके परों में तेज़ी भर देती है।

› आखिर में कवि स्वयं अपनी बात कहते हैं। वे सोचते हैं कि 'मुझसे मिलने को कौन विकल?' यानी मेरा इंतज़ार करने वाला तो कोई नहीं है। यह बात सोचते ही उनके कदम धीमे पड़ जाते हैं और उनके मन में उदासी भर जाती है, क्योंकि उनका जीवन सूना है, कोई उनका इंतज़ार नहीं कर रहा।

› इस तरह इन तीनों उदाहरणों से कवि ने समय के तेज़ी से बीतने और अपने प्रियजनों से मिलने की आतुरता के अलग-अलग पहलुओं को बहुत खूबसूरती से समझाया है।

उत्तर – कवि ने पथिक की मंज़िल तक पहुँचने की व्याकुलता, चिड़ियों की बच्चों से मिलने की आतुरता और अपनी स्वयं की मिलने वाले के अभाव में उत्पन्न उदासी के माध्यम से 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' के मर्म को व्यक्त किया है।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह ग़ज़ल बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इसके केंद्रीय भाव, ज़फ़र की पीड़ा और उनकी वतन से जुदाई पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं।

• हरिवंश राय बच्चन जी का जीवन परिचय, उनकी प्रमुख रचनाएँ (खासकर 'मधुशाला' और उनकी आत्मकथा), और उनकी काव्यगत विशेषताएँ बोर्ड परीक्षा में अक्सर 3-4 अंकों के लिए पूछी जाती हैं। इन्हें अच्छे से याद कर लेना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं में अक्सर 'कवि का दर्शन' या 'हालावादी दर्शन की व्याख्या' के रूप में पूछी जाती है। मधुशाला, मधुकलश, साकी, प्याला जैसे शब्दों को उनके प्रतीकात्मक अर्थ के साथ ज़रूर समझाना।

• यह कविता बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इसके केंद्रीय भाव, विरोधाभासों और व्यक्ति-समाज के संबंधों पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। इन बिंदुओं को अच्छे से समझ लेना।

• इन पंक्तियों की व्याख्या बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछी जाती है, खासकर 'स्नेह-सुरा' और 'जग का ध्यान' वाले भावों पर प्रश्न आते हैं। इसे अच्छे से समझना बहुत ज़रूरी है।

• इस कविता से अक्सर व्याख्या संबंधी प्रश्न आते हैं, खासकर विरोधाभासी भावों जैसे 'उन्मादों में अवसाद' या 'बाहर हँसा, रुलाती भीतर' पर। इन पंक्तियों के गहरे अर्थ और कवि के मनःस्थिति को अच्छे से समझकर लिखें।

• बोर्ड परीक्षा में 'शीतल वाणी में आग' या 'रोदन में राग' जैसे विरोधाभासी अलंकारों पर आधारित प्रश्न ज़रूर आते हैं। इन्हें ध्यान से समझना और इनके गहरे अर्थ को अपनी भाषा में स्पष्ट करना सीखना, पूरे अंक दिलाएगा.

• यह गीत बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसका केंद्रीय भाव, विशेषकर समय की क्षणभंगुरता और मिलन की उत्कंठा, पर आधारित प्रश्न अक्सर आते हैं। इसलिए इन बिंदुओं को अच्छे से समझ लेना।

• इस कविता के भावार्थ और काव्य-सौंदर्य पर आधारित प्रश्न बोर्ड परीक्षा में अक्सर आते हैं, खासकर कवि के अकेलेपन वाले छंद की व्याख्या पर ध्यान देना।

एक नज़र में रिवीज़न

› अंतिम मुगल बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र की निर्वासन, वतन से दूरी और दफन न हो पाने की पीड़ा।
› बच्चन: जन्म 1907 इलाहाबाद, निधन 2003 मुंबई। प्रमुख रचनाएँ: मधुशाला, आत्मपरिचय।
› हालावादी दर्शन: जीवन (मधुकलश), दुनिया (मधुशाला) - अनुभवों का सहर्ष स्वीकार।
› व्यक्ति-समाज संबंध, आत्म-पहचान, प्रीतिकलह, विरोधाभास: आत्मपरिचय का केंद्रीय भाव।
› जग-जीवन का भार, स्नेह-सुरा, मन का गान - आत्मपरिचय की मुख्य भावनाएँ।
› कवि का आत्मपरिचय: स्वप्नों में जीना, प्रेम की अग्नि, सुख-दुख में मग्न, यौवन के उन्माद में अवसाद।
› कवि संसार को अज्ञानी, भौतिकता का त्यागी; रोदन में राग, वाणी में आग; 'नया दीवाना'.
› समय की क्षणभंगुरता, लक्ष्य प्राप्ति व प्रिय मिलन की आतुरता।
› पथिक, चिड़िया, कवि उदाहरण से समय की गति व आतुरता का चित्रण।